https://www.echetana.com/Vol.-11, No.-01, Jan.-Mar. *2026*, pp. 38-42

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भारतीय ज्ञान परंपरा का बदलता स्वरूप एक विश्लेषण

सत्यपाल सिंह
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय
चिल्ड्रेन अकादमी बी.एड.कॉलेज, अलवर
रानी यादव
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
Email-satyaapalsingh02@gmail.com, Mobile-08209801343

……………………………………………………………….
First draft received: 07.01.2026, Reviewed: 19.01.2026
Final proof received: 21.01.2026, Accepted: 25.01.2026

सारांश

प्राचीन भारत में शिक्षा का क्रमबद्ध इतिहास ईसा पूर्व छठी शताब्दी से ही मिलता है। यह ज्ञान, परंपराओं और प्रथाओं का स्रोत है, जो मानव के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का सीधा सा अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम अर्थात भारतीय दर्शन में यहां के मानव समुदाय में प्रत्येक स्तर पर सांसारिक ज्ञान, या आत्मिक ज्ञान अर्थात परलौकिक ज्ञान की समझ विकसित करना है। भारतीय दर्शन दर्शनशास्त्र का सबसे पुराना स्कूल है और वेद प्राचीन हिंदू ग्रंथों में सबसे पुराने हैं और मौखिक वैदिक परंपरा 10,000 ईसा पूर्व की है जिनमें अधिकांश शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी और छात्र कक्षा में सीखी गई बातों को याद रखते और उन पर मेडिटेशन विधि से मनन करते थे। वैदिक युग में लिंगभेद नहीं था महिलाएं भी पुरुषों की तरह ही शिक्षण पेशे में भाग लेती थीं। इस काल में वेदों, इतिहास, पुराणों, व्याकरण, गणित, ब्रह्म विद्या, निरुक्ति, भूगोल, खगोल विज्ञान, नृत्य और संगीत शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण थी। बौद्ध शिक्षा को प्राचीन हिंदू शिक्षा प्रणाली का एक चरण माना जा सकता है, लोगों का जीवन लोभ, मोह, माया, अहंकार से मुक्त था सभी लोग जीवन के निर्धारित मूल्य के साथ आश्रम व्यवस्था में संस्कारित जीवन व्यतीत करते थे उस समय भी बहुत सारे आविष्कार और भूगोल शोध चिकित्सा खगोल विज्ञान और गणित के क्षेत्र में हुए थे जो आज भी पूरे विश्व में चर्चा का विषय बने हुए है उन्ही शोधों और अनुसंधानों के कारण हमने आज के औद्योगिक तकनीकी युग में प्रवेश किया तकनीकी औद्योगिक विकास में तो शायद हमारे देश ने खूब विकास किया है जिससे आज हमारे देश में इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, दुनिया के बड़े–बड़े विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं लेकिन हमारे देश के अंदर कुछ लोगों या वर्गों में पश्चिमी शिक्षा से आई भौतिकवाद, उपभोक्तावाद की शिक्षा ने लोगों में प्रतिस्पर्धा की दौड़, ईर्ष्या और घृणा की भावना को जन्म दिया। जिससे लोगों के व्यवहार में भ्रष्टाचार, अमानवीय व्यवहार, गैर कानूनी तरीके अपनाने जैसे विचारों का देश में प्रचलन हुआ। जो दीमक की तरह, लोहे में जंग की तरह, गेहूं में घुन की तरह हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था के मूल्यों जैसे आपसी प्रेम, सहानुभूति, दया, धर्म, एवं सहयोग और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों, न्याय के मंदिरों, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका जैसी देश की कानूनी संस्थाओं को कमजोर कर रहा हैं वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों से पता चलता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है एक अध्ययन से पता चलता है कि छात्र शिक्षक संबंधों में कमी, विद्यालयों के व्यवहार में भी कमी देखी गई। यदि विद्यार्थी जीवन से ऊपर जाकर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के बाद वर्तमान समय में दहेज हत्या, घरेलू हिंसा, कार्य स्थल पर शोषण, भ्रष्टाचार, भेदभाव जैसे अपराधों में वृद्धि दर्ज की गई है जिससे साफ पता चलता है कि कहीं ना कहीं हमारी शिक्षा व्यवस्था में कमी है हो सकता है कि हम व्यावसायिक शिक्षा बहुत अच्छी दे रहे हैं लेकिन ऐसी शिक्षा प्रणाली के साथ मूल्य आधारित संस्कारित व्यवहार का ह्रास हो रहा है। इसलिए हमारे केंद्र सरकार ने भारतीय ज्ञान परंपरा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अनिवार्य हिस्सा बनाया जिसमें इसे विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, कला और वाणिज्य संकाय के अंतर्गत सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाए जाने की सिफारिश शैक्षिक नियामक संस्थाओं से की है। मैं इस शोध के माध्यम से बताना चाहता हूं कि यदि परंपरागत शिक्षा के कुछ मूल्यों जैसे गुरुकुल के विद्यार्थी के गुण, गुरु के कर्तव्य , गुरुकुल के नियम और कक्षा के स्तर अनुसार वैदिक पाठ्यक्रम को NEP- 2020 के अनुसार कक्षाओं में पढ़ाया जाए। या धीरे धीरे उस पाठ्यक्रम को छोटी कक्षाओं में लागू किया जाए तो आने वाले भविष्य में 15 सालों में हमें संस्कारवान योग्य विद्यार्थी मिलेंगे जो देश दुनिया के हर कोने में अपना, समाज और देश का नाम रोशन करेंगे और शिक्षण छात्र संबंधों में सुधार होगा। एवं धीरे धीरे सभी विभागों में संयमित जीवन जीने वाले, मानव कल्याण की भावना, और देशहित सर्वोपरि की भावना रखने वाले नागरिकों का निर्माण होगा। और हमारा देश पुनः विश्व गुरु के पद पर सुशोभित होगा।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, वैदिक परंपरा, बौद्ध ,जैन, वर्तमान शिक्षा, विद्या, कोष, विद्यार्थी, कर्म, औद्योगिक, तकनीकी युग, देश, पाठ्यक्रम, विद्या, विद्यार्थी शिक्षक संबंध

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है जबकि हमारे भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे श्रेष्ठ शिक्षा प्रणालियों में से एक है लेकिन जैसे–जैसे तकनीकी शिक्षा का विकास हुआ और पश्चात्यकरण बड़ा तो हमारे देश के शिक्षाविदों, लेखकों, वैज्ञानिकों, विचारकों आदि सभी ने हमारी शिक्षा के मूल रूप को छोड़कर पश्चिमी देशों के तकनीकी शब्दों को वहां के ज्ञान एवं पाश्चात्य देशों की भाषा को हमारे देश के मूल शिक्षा की धुरी में जोड़ दिया गया। जिसका परिणाम ये हुआ कि आज की वर्तमान पीढ़ी हमारी शिक्षा के उन आदर्शों को भूल गई है जिसने हमें आर्यभट्ट, रामानुजन, वराह मिहिर, चाणक्य,

विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, जैसे विद्वान दिए जिन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली में अभूतपूर्व योगदान दिया है। आज की शिक्षा प्रणाली में यदि हम देखें तो सभी क्षेत्रों में अनुशासित जीवन की कमी है हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक विद्यार्थी का जीवन पूर्ण रूप से अनुशासित आदर्शवादी शांतिप्रिय और संयमित जीवन था जो धीरे–धीरे परिवर्तित होकर आज अनुशासनहीन अशांति और अनियमित सा प्रतीत होता है आज के विद्यार्थी में समझदारी की जगह रटने की प्रणाली देखने को मिलती है छात्र और शिक्षक संबंध भी हंसिए पर हैं आज के विद्यार्थी में बहुत कुछ प्राप्त करने की क्षमताएं हैं लेकिन वह बहुत कम समय में ही बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है जबकि ऐसा संभव नहीं है। फिर वह अनियमित या गैर कानूनी तरीके से वे सभी उपलब्धियां प्राप्त करना चाहता है जिसका उसने स्वप्न देखा है फिर जब कहीं वह कोई पद पर पहुंचता है तो वहां भी गैर कानूनी तरीके से अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने के प्रयास में भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, की दुनिया का निर्माण करता है हमारे वैदिक परंपरा में ऐसा कुछ नहीं था हमने पहली बार देखा जब कोविद–19 का समय था हमारे देश के बड़े–बड़े डॉक्टर जाने–माने चिकित्सालय जिन्होंने दवाइयां के दाम 3 से 5 व 10 गुना कर दिए बेड चार्ज बढ़ा दिए मेरा कहने का मतलब है की जहां हमें मानव सेवा का भाव रखते हुए जनता की सेवा करनी चाहिए थी वहां अवसर का लाभ उठाकर अपने आप को चंद पैसे के लिए या समाज में अपने आप को श्रेष्ठ दिखाने के लिए मानव विरोधी बना दिया, हमारे देश की शिक्षा तो ऐसी नहीं थी। हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली की बात करे तो हम **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेतः** एवं **वसुधैव कुटुंबकम** जैसे विश्वशांति और सभी प्राणियों के कल्याण की भावना रखने वाले विचारों को मानने वाले माने जाते हैं, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। फिर आज की शिक्षा में ये विचारधारा कहा से आई? विचारकों ने कहा भी था की हमारा देश तो ऐसा नहीं था हमारे देश की शिक्षा प्रणाली भी ऐसी नहीं थी फिर ऐसे लोग कहां से आए जिन्होंने हमारे समाज में ऐसी प्रणाली विकसित की आज शिक्षा के मंदिरों की भी बात करें तो हमें प्राचीन गुरुकुल दिखाई नहीं देते आज देश के जाने–माने शिक्षा के केंद्रों पर सरे आम शिक्षा का व्यापार हो रहा है। यह सब भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद जैसी प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था का है। प्राचीन काल में राजा के आश्रय में गुरुकुल चला करते थे जो पूर्ण रूप से फ्री थे जिम किसी भी प्रकार का पैसा नहीं लिया जाता था और गुरु दक्षिणा में भी गुरुकुल के विद्यार्थी अपने शौर्य का प्रदर्शन करते थे उस शौर्य का जो उन्होंने गुरु के आश्रम में 18 से 20 साल की शिक्षा में सीखा यही शौर्य गुरु की दक्षिण हुआ करता था कुछ राजा महाराजाओं के बच्चे गुरु दक्षिणा स्वरूप पैसे भी देते थे लेकिन अनिवार्य नहीं था आज यही गुरु दक्षिणा अनिवार्य हो गई और विभिन्न प्रकार के कमीशन के साथ यूनिफॉर्म किताबें स्टेशनरी का सामान आदि महगे से महंगे दामों में बच्चों को बेची जाती है। जब स्कूल और कॉलेज में ऐसा होता है तो ऊपर की रेगुलेटरी को इन चीजों पर अंकुश लगाना चाहिए लेकिन आज हम ऊपर की रेगुलेरिटीज की बात करते हैं तो वहां भी आज की शिक्षा प्रणाली से पढ़े हुए लोग उन पदों पर बैठे हुए हैं। उन रेगुलेटरी के सामने ही धडल्ले से नियमों की धज्जियां उड़ाई जाती हैं क्योंकि उनके पास उनका पारितोषिक पहुंच जाता है। और जब तक हमारे देश राज्य या क्षेत्र में ऐसा चलता रहेगा तब तक किसी भी क्षेत्र में सुधार की कल्पना नहीं की जा सकती। पहले स्कूल शिक्षा और बाद में उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार की अत्यंत आवश्यकता है। नीति निर्माताओं की सोच में बदलाव की आवश्यकता है। ये बदलाव बहुत कठिन हैं क्योंकि ये बीमारी बहुत पुरानी है जिस प्रकार शरीर से पुरानी से पुरानी बीमारी को निकलने के लिए बहुत से ऑपरेशन करने पड़ते है उसी प्रकार इस भ्रष्टाचार भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद जैसी प्रतिस्पर्धात्मक बीमारी से निजात पाने के लिए बहुत से ऑपरेशन करने की जरूरत है। अभी अभी 10 नवंबर को दिल्ली में लाल किले के पास बम विस्फोट हुआ जिसमें राष्ट्रीय जांच एजेंसी NIA ने खुलासा किया कि विस्फोट करने वाले डॉक्टर्स थे और बहुत ही शर्म की बात ये की वो किसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर भी थे। ये घटनाएं हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि शिक्षा के केंद्रों से ऐसी गतिविधि संचालित हो रही है। बात यही नहीं रूकती उस विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य क्या होगा। इस लिए मेरे अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यही है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बहुत सुधार की आवश्यकता है। हमे जरूरत है उस अनुशासन की जो प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में था। आज भी उन विद्वानों की चर्चा विश्व में होती है जिनकी वजह से किसी जमाने में भारत विश्व गुरु की उपाधि धारण किए हुए था। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि मेरे शोध के बाद निश्चित रूप से नीति निर्माताओं की सोच में बदलाव ही नहीं अपितु वैदिक कालीन व्यवस्थाओं को नीतिगत रूप से क्रियान्वयन की ओर कदम उठाए जाएंगे। सरकार शैक्षणिक संस्थानों या अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों में भ्रष्ट कर्मचारियों को सुधारने के लिए आध्यात्मिक संदेशों के माध्यम से नीतिगत कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा के प्राचीन पाठ्यक्रम के कुछ विषय आज की तकनीकी, प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा में लागू कर दिए जायेंगे तो हमें भविष्य में अच्छे संस्कारवान विद्यार्थी, विश्व कल्याण और देश हित की भावना रखने वाले शिक्षक, अधिकारी, सिपाही, डॉक्टर्स, विभिन्न विभागों में काम करने वाले ईमानदार कर्मचारी मिलेंगे। एक अध्ययन के माध्यम से पता लगा है कि यदि आज हम उन प्राचीन शिक्षा के आदर्शों को लागू करते है तो 15 साल बाद हमे अच्छे संस्कारवान, देश, समाज के नियमानुकूल काम करने वाले नागरिक प्राप्त होंगे। मेरे इस शोध के उपरांत देश में पनप रही हिंसक घटनाओं, राष्ट्र विरोधी आंदोलनों, स्लीपर सेल्स, आतंकी गतिविधियों पर नियंत्रण हो सकेगा। सांप्रदायिक सद्भावना एवं राष्ट्र की एकता बनाए रखने में बखूबी सहयोग प्राप्त होगा। अतः इस भारतीय शिक्षा प्रणाली से देश में चारों तरफ सहयोगात्मक भावना, मानव कल्याण, दया, धर्म और राष्ट्र उन्नति के भाव विकसित होंगे।

वैदिक कालीन शिक्षा का ज्ञान कोष

भारतीय शिक्षा प्रणाली को निम्नलिखित विश्व की प्राचीनतम शिक्षा प्रणाली है जिसने समय के साथ साथ स्वरूप परिवर्तित किया है हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात जिस नई संस्कृति का उदय हुआ वह वैदिक सभ्यता थी। इसमें चार वेदों (ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) की रचना हुई इसलिए इसका नाम वैदिक काल पड़ा। जो प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति, और धर्म के आधार है उनके विषय में समस्त जानकारी वेदों से मिलती है वेद संसार के सबसे पुराने साहित्य के रूप में जाने जाते हैं इस साहित्य के महत्व के बारे में भाषण देते हुए मैक्स मूलर ने कहा था कि जिस तरह हम हिमालय की ऊंचाई को एवरेस्ट चोटी से नाप कर देखते हैं ठीक उसी प्रकार भारत के ज्ञान को वेदों के कवियों उपनिषद के ऋषियों की कविताओं की गहनता से आंका जाता है भारत में वेदों को ईश्वरीय ज्ञान समझा जाता है जहां तक वैदिक ऋषियों का संबंध है वह वेदों को उच्चतम सत्य या अंतिम सत्य के रूप में देखते हैं जिनका प्रकाश ईश्वर की ओर से विशुद्ध आत्माओं के अंदर प्रवेश करता है इस वैदिक काल की रचनाओं में अर्थात वेदों, उपनिषदों, पुराणों में अति प्राचीन काल व दैवीय युग जो सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है ये घटनाएं अर्थात युग आज से लगभग 1728000 वर्ष पूर्व की मानी जाती हैं जो विश्व में सबसे पुरानी घटनाएं है इसे भी दो भागों में विभाजित किया गया है

1. पूर्व वैदिक काल **2.** उत्तर वैदिक काल 3. **पौराणिक काल**

- **पूर्व वैदिक काल (1500–1000 ई पूर्व)**

  इसमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन देवताओं की स्तुतियों का संग्रह है

- **उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई पूर्व)**
  की प्रमुख रचनाओं में यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इनके ब्राह्मण ग्रंथ जैसे शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय, आरण्यक, और उपनिषद ये ग्रंथ दर्शन और आध्यात्मिकता पर केंद्रित हैं, जिनमें ब्रह्म, आत्मा और जीवन के गहन प्रश्नों पर चर्चा की गई है शामिल हैं, जिनमें दार्शनिक विचार, कर्मकांड और सामाजिक जीवन का वर्णन है, ब्राह्मण ग्रंथ प्रत्येक वेद से जुड़े ब्राह्मण ग्रंथों (जैसे शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण) में कर्मकांडों और अनुष्ठानों की व्याख्या है। आरण्यक ग्रंथ, जो उपनिषदों के पहले के दार्शनिक विचार प्रस्तुत करते हैं।

- **पौराणिक काल** (600ई **पूर्व – 750ई)**
  पुराण ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड पुराण इस अवधि में लिखे गए इन ग्रंथों की जड़ें प्राचीन वैदिक साहित्य और लोककथाओं में हैं, जो हजारों साल पुरानी हैं, रामायण महाकाव्य जो ऋषि बाल्मीकि द्वारा रचित है इसका समय खगोलीय या गणितीय गणनाओं के आधार पर 5,000 से 7,000 ईसा पूर्व माना गया है जबकि भारतीय काल गणना के अनुसार रामायण के रचना का समय 8,64000 वर्ष द्वापर युग के और 5,250 वर्ष कलयुग के अर्थात 8,69250 वर्ष पूर्व हुई थी। महाभारत महाकाव्य जो 3,102 ईसा पूर्व (आर्यभट्ट के अनुसार)अर्थात 5,127 वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्याश जी द्वारा लिखा गया रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना पौराणिक युग के दौरान हुई, जो उस समय के समाज और राजनीति को दर्शाते हैं। जो वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य के बीच के संक्रमण काल (संधि काल) को दर्शाते हैं, और इनमें वैदिक देवताओं का उल्लेख होने के बावजूद, ये वैदिक ग्रंथों (जैसे वेद) से भिन्न हैं और पौराणिक नायकों (राम और कृष्ण) को जनसाधारण के नायक के रूप में स्थापित करते हैं। इन ग्रंथों की जड़ें प्राचीन वैदिक साहित्य और लोककथाओं में हैं, जो लाखों साल पुरानी हैं,

आधुनिक समय में IKS की उपयोगिता

भारत की वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति में बच्चा अपने कर्म पर फोकस करता था विद्यार्थी को बचपन से ही ऐसे पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षा दी जाती थी जिससे वह शिक्षा पूर्ण करने के बाद एक योग्य और जिम्मेदार नागरिक तो बनेगा ही बल्कि अपने क्षेत्र में जीवन की हर परिस्थिति में अपने आपको श्रेष्ठ व्यक्तित्व के रूप में प्रेजेंट करेगा। यदि हम प्राचीन शिक्षा के पाठ्यक्रम की बात करें तो उस समय के पाठ्यक्रम के हर पहलू पर चाहे शिक्षक हो या विद्यार्थी या आम नागरिक सभी के लिए

अनुशासित संयमित जीवन शैली की बात की गई है। **शंकराचार्य के अद्वैतवादी मत** के अनुसार संसार की सृजन का आधार माया है जो ईश्वरीय शक्ति है और एक अज्ञान है जिससे माया को पहचाना नहीं जा सकता मनुष्य इसी के वशीभूत हो जाता है अज्ञान के अनेक पर्दे आत्मा को जकड़ रहते हैं जिस कारण मनुष्य सत्य को नहीं देख पाता। इसी भ्रम के कारण पूर्ण जगत सत्य लगता है माया और अविद्या (अज्ञान) को एक ही माना गया है क्योंकि दोनों ही सत्य का ज्ञान नहीं होने देते। लेकिन शंकराचार्य जी ने माया को ईश्वरीय शक्ति और अविद्या को मनुष्य का अज्ञान माना है इस माया की शक्ति से ही ईश्वर ने इस विचित्र श्रृष्टि की रक्षा की है, अज्ञानी इसी माया के संसार को सत्य समझ लेते है जबकि तत्व ज्ञानी व दूरदृष्टा इसे ईश्वर की लीला समझकर इसमें ब्रह्म की शक्ति का दर्शन करते है। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार एक जादूगर अनेक खेल दिखाकर लोगों को भ्रम में डाल देता है, परन्तु स्वयं भ्रम में नहीं पड़ता। इसी प्रकार आज का विद्यार्थी शिक्षक महिला या पुरुष अधिकाश यूट्यूब, इंस्टाग्राम फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेट फॉर्म पर ब्लॉग, रील, शॉर्ट्स वीडियो के के अल्प सुख के लिए जीवन के उद्देश्यों को भूले हुए हैं। अतः यह भ्रम या माया अज्ञान के कारण ही है। मनुष्य इस माया के वशीभूत हो जाता है और इसके फैलाए अनेक जालों (पर्दों) में जकड़ जाता है। अतः शिक्षा का प्रमुख कार्य इस अज्ञान या माया को दूर कर मनुष्य को सत्य तक पहुंचना है। **उपनिषदों में शिक्षा** को ही विद्या कहा गया है विद्या से ही आत्मानुभूति मिलती है विद्या का लक्ष्य जन्म मरण से मुक्ति दिलाना है और आत्मा की पहचान कर आत्मानुभूति करना है जिससे जिससे अमरत्व प्राप्त हो सके। अर्थात शिक्षा का लक्ष्य आत्मानुभूति करना है, आत्मानुभूति से ही आनंद की प्राप्ति होती है, आनंद से ही सभी प्राणी उत्पन्न होते है, उसी के फलस्वरूप वे जीवित रहते है और अंत में उसी में विलीन हो जाते है जो इस आनंद को प्राप्त कर लेता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता, उसे दुनिया के अच्छे बुरे कार्य पीड़ित नहीं करते वह पाप पुण्य से ऊपर उठ जाता है आनंद आत्मा का ही लक्षण है। अतः आनंद की प्राप्ति के लिए हमें विद्या की आवश्यकता होती है जिससे माया के पर्दों को हटाया जा सके। एल के कोड के अनुसार आनंद की अनुभूति के लिए माया के निम्न पर्दों को हटाया जाना जरूरी हैं

अन्नमय कोष

जीवन की पहली आवश्यकता अन्न है अतः अन्न की जरूरत को पूर्ण करना आनंद प्राप्त का पहला चरण है मानव को जीवित रहने के लिए पेट भरने की कला आनी चाहिए। और इस कला में मानव को दक्ष रहना चाहिए।लेकिन जीवन का अंतिम लक्ष्य भी नहीं होना चाहिए।

प्राणमय कोष

यह आनंद प्राप्ति का दूसरा चरण है जिसमें भौतिक से ऊपर स्वयं है यदि प्राण है तभी भौतिक आनंद की प्राप्ति कर सकता है प्राण ही वह शक्ति है जिससे जीव स्वास लेता है रक्त का संचार होता है हड्डियों का निर्माण होता है और शरीर स्वस्थ रहता है तभी आनंद की प्राप्ति की कल्पना की जा सकती है अतः स्वस्थ शरीर और स्वस्थ शिक्षा का वास होना आनंद का दूसरा लक्ष्य है।

मनोमय कोष

संसार में मनुष्य का स्थान श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि मानव में मन या मस्तिष्क होता है वह विचार, स्मरण, या निर्णय ले सकता है अतः इंद्रियों पर नियंत्रण के साथ मन को बंधनों के मुक्त रख कर, मानसिक क्रियाओं पर नियंत्रण का अभ्यास करे। अतः मन में भटकाव की स्थिति उत्पन्न नहीं होनी चाहिए।

विज्ञानमय कोष

ज्ञान से विज्ञान की स्थिति तक पहुंचना निश्चित ही श्रेष्ठ है इंद्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त कर बुद्धि द्वारा विवेचन, विश्लेषण,कर ही आवश्यकता, अनावश्यकता का निश्चय किया जाता है तभी अच्छे या बुरे का निर्णय किया जाता है। अतः तर्कसंगत ढंग से स्वयं द्वारा सही ज्ञान तक पहुंचने का अभ्यास होना चाहिए। मात्र पुस्तकीय ज्ञान या इंद्रियों से प्राप्त ज्ञान को विद्वता या योग्यता का आधार मानना उचित नहीं है नई शिक्षा नीति 2020 भी इस पर बल देती है कि विभिन्न परिस्थितियों में छात्र स्वयं ज्ञान ग्रहण करे और खुद करके सीखे। ज्ञान को जबरदस्ती थोपा नहीं जाना चाहिए।

आनंदमय कोष

यह शिक्षार्थी या अनुसन्धान कर्ता की अंतिम स्थिति होती है, इस स्थिति तक पहुंचने वाला व्यक्ति जीवन मुक्ति की स्थिति में पहुंच जाता है। इसमें विद्यार्थी उपयुक्त कोषों को समझते हुए अज्ञान को डोर करता हुआ मुक्तानंद कि स्थिति को प्राप्त करता है

अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तकनीकी, कृत्रिम बुद्धिमता पूर्ण शिक्षा में शिक्षार्थी को स्वयं को तथा अपने कर्म को समझना अति आवश्यक है अपने कर्म से विमुख होते आज के आधुनिक मानव को या विद्यार्थी को इस आत्मज्ञान रूपी शिक्षा के माध्यम से कर्तव्य पथ पर लाना तथा तनाव व अवसाद मुक्त जीवन का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

कर्म की शिक्षा

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि मनुष्य को निर्णय लेने की स्वतंत्रता है तथा कर्म करने की स्वतंत्रता है यद्यपि इस स्वतंत्रता के फल स्वरुप मनुष्य अकरणीय कार्य नहीं कर सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर ईश्वर निवास करता है और जब व्यक्ति अंतःकरण की प्रेरणा से कोई कर्म करता है तो उसके पीछे ईश्वर या उसकी प्रेरणा विद्यमान रहती है क्योंकि सभी प्राणियों में वही ईश्वर विद्यमान है इसलिए स्वभाव अथवा धर्म की सहज प्रवृत्ति से प्रेरित मनुष्य का करम सामाजिक अहित का कारण बन ही नहीं सकता। भगवान श्री कृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि **कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन** अर्थात मनुष्य का अधिकार कर्म करना है, फल में नहीं मनुष्य को तो कर्म करने का अधिकार है, शुभ अशुभ का फल उसे भगवान पर छोड़ देना चाहिए। शिक्षा कर्म की प्रक्रिया में है, प्रमाण पत्र में नहीं। प्रत्येक विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से भरसक प्रयास करना चाहिए सफलता या असफलता को भगवान पर छोड़ देना चाहिए यही अपेक्षा शिक्षक से भी की गई है कि एक शिक्षक को अपना कार्य उत्कृष्ट रूप से परिश्रम अथवा विषय के पर्याप्त ज्ञान की तैयारी के साथ करना चाहिए। और फिर परिश्रम का फल भगवान पर छोड़ देना चाहिए। निश्चित रूप से दोनों ही स्थितियों में सफलता निश्चित है। हम इन्हीं सिद्धांतों को यदि सभी लोगों पर लागू करके देखें जिसमें सभी लोग अपने जिस पद पर कहीं भी नियुक्त हैं वहां ईमानदारी व पूरी निष्ठा से अपने कर्म का पालन करें तो निश्चित रूप से एक कल्याणकारी राष्ट्र का निर्माण स्वाभाविक है। कर्म के एक प्राचीनतम सिद्धांत के अध्ययन से पता लगा है कि कहीं भी किसी भी स्थिति में जीवन में हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल हमको मिलेगा। ये निश्चित है की अपने ही कर्म अपनी ही इसी जिंदगी में वापिस लौट कर आते है, हमने यदि किसी को परेशान किया है तो निश्चित ही हमें कोई ना कोई परेशान जरूर करेगा। और यदि हमने किसी का अच्छा किया है तो हमारे साथ भी अच्छा होगा ये निश्चित रूप से सही बात है। फिर कभी शायद किसी की लड़की दहेज हत्या या घरेलू हिंसा की शिकार नही होगी। और फिर किसी गरीब को अपने कामों के लिए बार बार दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। एक बार में सही समय पर काम होगा। वैदिक कालीन शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक विद्यार्थी या योगी के लिए निम्नलिखित नियमों अष्टांगों का पालन करना अनिवार्य माना गया है

यम

मानव व्यवहार के ये पांच अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह यम है इसके अनुसार किसी प्राणी को किसी भी प्रकार का आघात नहीं पहुंचना चाहिए। मन और वचन से सत्य बोलना चाहिए,किसी प्रकार की चोरी नहीं कर प चाहिए, अपनी वासनात्मक वृत्तियों पर नियंत्रण रखना चाहिए और दूसरों से अनावश्यक वस्तुएं दान स्वरूप नहीं लेनी चाहिए। ये साधनाएं आवश्यक है अन्यथा वह सत्य ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता और समाधिस्थ होकर आत्मसाक्षात्कार नहीं कर सकता।

नियम

विद्यार्थी के पांच नियम है पहला शौध अर्थात शारीरिक और मानसिक शुद्धता हो, दूसरा संतोषी जो प्राप्त हुआ उसी में खुश रहना, तीसरा तपस गर्मी और शीत सहन करने की क्षमता उत्पन्न करना,चौथा स्वाध्याय धर्म ग्रंथों के अध्ययन में करते रहना और पांचवां ईश्वरीय परिधान जिसमे ईश्वरीय चिंतन और उसके प्रति समर्पण का भाव विकसित करना है

आसन

शारीरिक बाधाओं से मुक्ति के लिए, पुष्ट एवं निरोगी रहने के लिए पद्मासन, मयूरासन, भद्रासन, वीरासन आदि करना जरूरी था

प्राणायाम

स्वास किया के नियंत्रण से संबंधित पूरक, कुंभक, रेचक ये तीन अवस्थाएं होती है जो हृदय को शक्ति के प्रदान करती है

प्रत्याहार

इसमें विद्यार्थी अपनी इंद्रियों को अपने मन के वश में कर लेता है शवासन (मृत शरीर की मुद्रा) में लेटकर, अपने शरीर और मन के अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करना, इंद्रियों को बाहर जाने से रोकना, किसी बाह्य वस्तु पर ध्यान देने के बजाय, अपनी आंतरिक ऊर्जा या मुद्रा पर ध्यान केंद्रित करना और उसे भीतर की ओर मोड़ना।

धारणा

इसमें धरना के अनुसार चित पर नियंत्रण पाने का अभ्यास किया जाता है

ध्यान

इसमें विद्यार्थी को कहा जाता था कि लगातार निर्बाध रूप से किसी वस्तु पर ध्यान लगाना, जिससे किसी कठिन वस्तु का स्वरूप स्पष्ट और वास्तविक स्वरूप प्रत्यक्ष हो जाता हैं।

समाधि

समाधि में मनस एक पदार्थ पर केंद्रित होकर उस पदार्थ में अपने आप को एक कर लेता है

धारणा, ध्यान, और समाधि तीनों ही मानसिक साधना से संबंध रखते है तीनों अंतरंग क्रियाएं है उपर्युक्त सभी आठों साधनाओं को करने से एक विद्यार्थी अपने जीवन में दैवीय शक्तियां प्राप्त कर लेता था। अणिमा, गणिमा, लघुमा और महिमा नामक सिद्धियां उसके वश में हो जाती है वह हिंसक पशुओं को अपने वश में कर सकता है, इच्छित पदार्थ प्राप्त कर सकता है, देवी देवताओं से साक्षात्कार कर सकता है और वह अंतर्ध्यान व प्रकट होने की शक्ति प्रात कर लेता है।

छात्र शिक्षक संबंध

शिक्षक का विद्यार्थियों को संदेश **'यानि अस्माकम सुचरितानीं, तानि त्वया उपास्यानि नो इतराणी'** हमेशा अच्छे चरित्र का अनुसरण करो अन्य का नहीं। **सत्यं वद धर्मं चर स्वाध्यायन्मा प्रभद मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव।** इसमें सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिए गुरु द्वारा कोई भी उपदेश नहीं दिया गया है आज का विद्यार्थी बहुत कम समय में बहुत अधिक और बड़ी उपलब्धियां प्राप्त करना चाहता है क्योंकि वह अपने आसपास के परिवेश में देखता है कि माता पिता भी अपनी इच्छाएं अपने सपने बच्चे पर थोप देते है, जिससे बच्चे पर दबाव बन जाता है और जब बच्चा वह उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता है तो फिर बच्चा अवसाद, निराशा, और तनाव का शिकार हो जाता है एक अध्ययन से हमें पता लगा है कि कोटा (राजस्थान) में NEET की तैयारी के दौरान आत्महत्या करने वाले 80% विद्यार्थियों ने पढ़ाई के दवाब में या परिणाम से दुःखी होकर आत्महत्या की थी। अतः मेरे इस शोध के माध्यम से बताना चाहता हु कि यदि हम शिक्षा में हमारे पुराने मूल्यों का उपयोग करेंगे तो बच्चों में मेडिटेशन के माध्यम से सोचने समझने की शक्ति का विकास होता है। लगातार प्रातः गायत्री मंत्र या प्रातः कालीन प्रार्थना सभा करने से सकारात्मकता का विकास होता है बच्चे के फ्री माइंड काम करने से कार्य में 80% तक सफलता प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी कठिन तैयारी के दौरान माता पिता का बच्चों के प्रति बिना दबाव के सहयोगात्मक व्यवहार अपनाना चाहिए। आजकल की फाउंडेशन कोचिंग कल्चर में प्रातःकालीन प्रार्थना सभा नहीं होती। बच्चे सीधे कक्षा में पहुंचते हैं पूरे दिन और ऐसे ही सप्ताह में 6 दिन लगातार पढ़ाई सातवें दिन पेपर और परिणाम बस यही प्रणाली पूरे साल चलती है। ऊपर से मोटी फीस ऐसे में परिणाम भी अनुकूल नहीं तो अवसाद स्वाभाविक है। जिससे छात्र शिक्षक संबंधों में गिरावट देखी जा रही है। एक पौराणिक कथा से पता लगा है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की गुरुकुल परंपरा में एक आदर्श विद्यार्थी के पांच लक्षणों का वर्णन किया गया है, जिसमें "काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पाहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।" अर्थात कौए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते जैसी नींद, कम भोजन और घर अथवा मोह माया दुनियादारी से त्याग की बातों को शामिल किया गया हैं, वहीं आधुनिक युग के अधिकांश विद्यार्थी सोशल मीडिया जैसी नेटवर्किंग साइट्स इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप की कृत्रिम बुद्धिमता जैसी प्रतिस्पर्धात्मक तकनीकी शिक्षा समय पर भी अपने माइंड का सही दिशा में प्रयोग नहीं कर रहे है मेरे शोध के माध्यम से पता लग रहा है कि आज की तकनीकी प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा प्रणाली आज के वैश्वीकरण युग के नजरिए से बहुत ही जरूरी है जैसे–जैसे हम दुनिया के बड़े–बड़े विकसित देशों के साथ बराबरी से आगे बढ़ रहे हैं। वैसे वैसे हमारे देश के नागरिकों को, देश के भविष्य कहे जाने वाले नन्हे नन्हे विद्यार्थियों को शिक्षकों को आचरणशील व्यक्तित्व धारण कर अपने आस पास के वातावरण में संयमित जीवन, सादर व्यवहार, उच्च मानवीय गुणों के साथ एक प्रगतिशील, सतत विकास युक्त, राष्ट्रवादी, मानव कल्याण की भावना से आगे बढ़ने वाले समाज की स्थापना करनी होगी।

आध्यात्मिक विकास

भारतीय दर्शन मानव को धर्म और अध्यात्म से जोड़े रखता है धर्म इंसान को इंसानियत और सुकून देता है अध्यात्म मानव को इस पूरे ब्रह्मांड के साथ कनेक्शन स्थापित करता है चाहे वो पृथ्वी के साथ हो या ईश्वर के साथ हो। भारतीय ज्ञान परंपरा की Metaphysics (तत्त्वमीमांसा) ने हमें आज के विज्ञान को विकसित करने का अवसर दिया जो हमें आज Cosmology (सृष्टि मीमांसा), theology (ईश्वर मीमांसा), और Psychology (मनोविज्ञान) के रूप में पढ़ने को मिलते हैं। कॉस्मोलॉजिस्ट में सृष्टि को परमाणु से निर्मित बताया गया है जो आज का विज्ञान भी मानता है। तत्व मीमांसा में कहा गया है कि मानव एक ऐसी प्रजाति है जो कल्पना कर सकती है अर्थात सोच सकती है और इसी मानव की सोच ने आज विज्ञान खड़ा कर दिया यह बात भी आज के मनोविज्ञान ने सच साबित कर दी कि मानव चेतन है जो क्रिएटिव थिंकिंग करता है। Epistemology (ज्ञानमीमांसा) परसेप्चुअल Errer अर्थात भ्रम को बहुत ही ऊंचे स्तर पर स्पीड से दूर करता है। प्राचीनतम Axiology (मूल्य मीमांसा) को आज एथिक्स और एस्थेटिक्स के नाम से पढ़ाया जाता है जिसका मूल मंत्र "Beauty lies in the eyes of the beholder" "सुंदरता तो देखने वाले की आंख में होती है" जबकि सुंदर तो वो है जिसको देख के हमारा दिमाग कहता है कि वो सुंदर है। अतः आज मानव को आवश्यकता है गहराई से मानव मूल्यों को पहचानने की जिसके लिए वेदांत जैसी प्रणालियां आध्यात्मिक कल्याण की प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है प्राचीन वेदों पर आधारित शिक्षा भावनात्मक बुद्धिमत्ता व सजगता के साथ मार्गदर्शन प्रदान करती है जिससे अनेक अधिकांश लोग गहन संतुष्टि की तलाश में हैं।

नवाचार

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्राचीनतम पद्धतियों ने ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं तकनीकी रूप से वैज्ञानिक प्रगति में योगदान दिया है। गणित, खगोल विज्ञान और धातु विज्ञान और Exiology से शून्य, दशमलव प्रणाली और त्रिकोणमिति जैसी अवधारणाएँ विकसित हुई जो प्राचीन भारतीय चिंतन से समसामयिक तकनीकी विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान ने नवाचार को बढ़ावा देने में स्थायी एवं महत्वाकांक्षी भूमिका निभाई है। भारतीय ज्ञान प्रणाली अंतर्विषयक पाठ्यक्रमों के विकास, पर्यावरण, स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, शिक्षण विधियों, कला एवं साहित्य, कृषि, इंजीनियर, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन व अर्थशास्त्र के क्षेत्रों अंतर्विषयक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सकता है।

आधुनिक भौतिकवाद

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक युग में बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही करेगी नई शिक्षा नीति 2020 के तहत वैदिक युगीन अध्यात्म, निष्काम कर्म, परम सत्य और विद्यार्थी जीवन में यम ,नियम, और प्राणायाम की शिक्षा के साथ ही अनमय, प्राणमय, मनोनय, विज्ञानमय व आनंदमय कोषों की आत्मिक संतुष्टि वाली शिक्षा से आज के विद्यार्थियों में बढ़ रहा अविश्वासी, लालची, और स्वार्थी फ्रेंडशिप कल्चर को कम किया जा सकता है इसके कम होने से विद्यार्थी दोस्ती की वास्तविक परिभाषा को समझ पाएंगे जिससे एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने,जीवन के लक्ष्यों को समझकर निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। जिससे भावी गृहस्थ जीवन में भी अपने जीवन साथी या परिवार समाज के साथ संयमित संस्कारित व्यवहार करेगा। और आज के वैश्वीकरण, औद्योगिक तकनीकी आर्थिक, विकास के प्रतिस्पर्धा वादी युग में जो भौतिकवाद और उपभोक्तावाद जैसी प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति विकसित होती जा रही है उस पर बहुत हद तक रोक लगेगी। यह भौतिकवाद, उपभोक्तावाद हमारे समाज और देश के संसाधनों के अनियमित और असीमित उपभोग को बढ़ावा देता है यह सब आज के औद्योगिक तकनीकी युग में प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति का कमाल है जिसमें आज का अधिकांश गोल्ड कॉलर, व्हाइट कॉलर अंधा हो चुके हैं, जिसे देश की संस्कृति और राष्ट्र की एकता से कोई सरोकार नहीं है, वर्तमान में यही भौतिकवाद और उपभोक्तावाद माध्यम वर्ग में भी प्रवेश कर गया है, जो अभी दिखावे एवं बड़प्पन की दुनिया में प्रवेश कर रहा है। जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था एक लुटेरी अर्थव्यवस्था बनती जा रही है। धीरे धीरे यही आदतें भ्रष्टाचार का रूप लेती हैं जिसमें भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, अनैतिकता पूर्ण कार्य करने वाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही है अभी के तत्कालीन अध्ययनों से पता लगा है कि IKS प्रणाली के बदलते स्वरूप में यदि प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उपर्युक्त कुछ नियमों को पाठ्यक्रम में नियोजित क्रियान्वित कराया जाए तो निश्चय ही हमारे देश की संस्कृति को बचाया जा सकता है। जिससे देश वासियों में प्रेम सहानुभूति सहयोग स्नेह, और एक दूसरे को सम्मान देने वाली विचारधारा को वापिस स्थापित किया जा सकता है।

उद्देश्य

- भारतीय विद्यार्थियों के व्यवहार में उच्च स्तरीय परिवर्तन देखने को मिलेगा। जिससे वैश्वीकरण के युग में विश्व शांति की भावना का विकाश होगा।
- शिक्षा नियामक संस्थाओं या अन्य विभागों की उच्च संस्कारवान कर्मियों जो मानव कल्याण व देश हित सर्वोपरि की भावना रखने वालों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।
- सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में बदलाव होगा, भ्रष्टाचार कम होगा जिससे देश आर्थिक विकास में प्रगति करेगा।
- सहयोग और समन्वय की भावना को विकाश होगा देश की उच्च संस्थाओं, मंत्रालयों, स्वतंत्र संस्थाओं और गैर सरकारी संस्थाओं के मध्य समन्वय स्थापित होगा।

- एक भारत श्रेष्ठ भारत, और विकसित भारत 2047 जैसी योजनाओं के लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग होगा। जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और पर्यावरणीय स्थिरता पर जोर दिया गया है, जिसके लिए शासन, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में बड़े सुधारों की आवश्यकता है, जिसमें उच्च प्रति व्यक्ति आय, गरीबी में कमी, महिला सशक्तिकरण और वैश्विक आर्थिक शक्ति बनना मुख्य उद्देश्य हैं। अर्थात 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है।
- ऐसे विद्वान लोगों का डेटाबेस तैयार करना होगा जो प्राचीन भारतीय दर्शन में रुचि रखते हैं तथा समसामयिक शिक्षा क्षेत्रों में उसके प्रयोग का समर्थन करते है।
- लोगों के व्यवहार में आध्यात्मिकता का विकास होगा जिससे लोगों में एकता सहानुभूति सहयोग, बढ़ेगा तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मजबूती मिलेगी, और देश विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करेगा।
- IKS के पाठ्यक्रम शामिल करने से परंपरागत शिक्षण विधियां, जिसमें दर्शन, वास्तुकला, इंजीनियरिंग,भाषाविज्ञान, साहित्य से ज्ञान का विकास होगा।
- प्ज्ञै प्रणाली के माध्यम से ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रमों में क्रेडिट सिस्टम, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (।ठब्) जैसे नवाचारों का प्रयोग किया गया है जिससे शिक्षा प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ेगी।
- छम्च् 2020 के तहत उच्च शिक्षा संस्थानों में सभी संकायों में इंडक्शन प्रोग्राम और रिफ्रेशर कोर्स के माध्यम से क्रेडिट मॉड्यूल पर आधारित मानवीय मूल्य, वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद, संस्कृत आदि विषयों की अल्पकालिक शिक्षा लागू की जा रही हैं ।
- विभिन्न विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय समझौते कर बहुविषयक पाठ्यक्रम संचालित कर रही है मूल्यों के साथ संस्कृति हस्तांतरण हो सकेगा।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी अत्यंत प्रासंगिक बनी हुई है, जो तनाव प्रबंधन और स्थिरता जैसी समकालीन चुनौतियों के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है। इसके विशाल ज्ञान भंडार में व्यक्तियों, समुदायों और मानवता के उत्थान की अपार क्षमता है। इसीलिए भारतीय ज्ञान प्रणाली पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली मानी जाती है हमे विश्वास है कि यह प्रणाली भारतीय समुदायों में उच्च मानवीय गुणों का संचार करेगी और भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमता के साथ साथ रोबोटिक्स, नैनो टेक्नोलॉजी,स्वचालित परिवहन, ब्रेन कंप्यूटर, अंतरिक्ष बस्तियां जैसी बड़ी योजनाओं संतुलित और सतत तरीके से विश्व कल्याण की भावना के साथ विश्व पटल पर रखी जाएंगी

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Traditional Knowledge Systems of India
- https://www.sanskritimagazine.com/india/tradit ionalknowledge-systems-of-India/
- Indian Knowledge Systems Vol 1 https://iks.iitgn.ac.in/wp-content/uploads/2016/01/Indian-
- Knowledge-Systems-Kapil-Kapoor.pdf https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/ how-colonial-india-destroyed-traditional knowledge-systems/
- https://iksindia.org/ about.php
- www.education.gov.in
- Noddings. Nel. Philosophy of Education. Boulder.CO: Westview Press- i`"B la[;k 1- ISBN no. 0.8133.8429. X. ¼1995½
- Frankena. William K. Raybeck. Nathan; Burbules. Nicholas . "Philosophy of Education". Guthrie. James W. Encyclopedia of Education. 2nd edition. New York. NY: Macmillan Reference- ISBN no. ¼2002½ 0.02.865594. X
- Phillips. Trevor. J. "Ch- III: Transactionalism in Contemporary Philosophy and Ch- V The Educative Process". çdkf'kr Tibbels. Kirkland. Patterson. John. Transactionalism: An Historical and Interpretive Study. Independently published. i`"B la[;k 163–205- ISBN no. 9781520829319 ¼2017&03&18½-
- "Philosophy and Education". Teachers College Columbia University. ewy ls 2017&05&17 dks iqjkysf[kr vfHkxeu frfFk 2017&04&29-
- "Philosophy of Education & Courses NYU Steinhardt". www.Steinhardt.nyu.edu. ewy ls 2017&04&01
- "Doctor of Philosophy in Education". Harvard Graduate School of Education. ewy ls 2017&04&20 dks iqjkysf[kr vfHkxeu frfFk 2017&04&29-
- "Plato and Aristotle: An Introduction to Greek Philosophy The Art of Manliness". The Art of Manliness- 2010-02-04- ewy ls 2018-06-27.
- "Plato: Phaedo Internet Encyclopedia of Philosophy". www.iep.utm.edu. ewy ls 2017&05&07 dks iqjkysf[kr vfHkxeu frfFk 2017&04&29.
- "The Internet Classics Archive Phaedo by Plato". www.Classics.mit.edu. मूल से 2010–01–23 को पुरालेखित अभिगमन तिथि 2017–04–29.
- ष्प्राचीन भारतीय शिक्षा की प्रशासनिक व्यवस्थाष् मूल से 11 मई 2018 को पुरलेखित अभिगमन तिथि 11 मई 2018